गुर्जर प्रतिहार

शाब्दिक अर्थ → द्वारपाल

→ अरब आक्रमणकारियों से रक्षा करने के कारण प्रतिहार कहलाये

→ इनकी तुलना मौर्य और गुप्त राजाओं से की जाती है

→ ये स्वयं को लक्ष्मणवंशी, रघुवंशी, सूर्यवंशी मानते है।

→ इनकी जानकारी पुलकेशिन II के एहोल अभिलेख से भी जानकारी मिलती है।

→ गुर्जर प्रतिहारों की उत्पत्ति :

- ↳ कनिंघम ने कुषाण वंशी ✓
- ↳ कैनेडी ने ईरानी शैली का बताया है।
- ↳ G.H. ओझा → क्षत्रिय माना है।
- ↳ कर्नल टॉड ने विदेशी माना है।
- ↳ डॉ. भण्डारकर ने विदेशी माना है।
- ↳ मुहणोत नैणसी ने 26 शाखाएं बतायी हैं।

→ दो प्रसिद्ध → मण्डौर, भीनमाल

→ गुर्जर प्रतिहारों का प्रभाव केन्द्र → मारवाड़.

" " प्रमुख केन्द्र → ओसिया

→ प्राचिनतम केन्द्र → मण्डोर

→ गुर्जर प्रतिहारों की कुल देवी → चामुण्डा माता

→ गुर्जर प्रतिहारों की शैली → गुर्जर प्रतिहार | महामारू शैली

- चामुण्डा माता : गुर्जर प्रतिहारों की कुल देवी
  - → इन्दा शाखा के प्रतिहारों की कुल देवी
  - → राठौड़ राजवंश की आराध्य देवी

घटियाला शिलालेख

- उत्कीर्णकर्ता → सुवर्णकार कृष्णेश्वर
- हरिश्चन्द्र से कक्कुक तक की जानकारी
- 861 ई. का
- सती प्रथा
- विनायक सिद्धम से शुरुआत
- संस्कृत भाषा
- उत्कीर्ण → कक्कुक
- दासप्रथा की जानकारी

बाउक प्रशस्ति

→ बाउक की

→ कब → 837

→ हरिश्चन्द्र से बाउक तक की जानकारी

→ प्रतिहारों के वंश परम्परा की जानकारी

मण्डोर → पहला | प्राचीनतम केन्द्र

↳ गुर्जर प्रतिहारों का गुरु | मूल पुरुष → हरिश्चन्द्र

→ हरिश्चन्द्र के पुत्र → रज्जिल, भोगभट्ट, कक्क, दद्द

→ रज्जिल ने मण्डोर भाग के चार दिवारी का अधिकार किया

→ हरिश्चन्द्र को रोहिल्लद्धि भी कहा जाता है।

हरिश्चन्द्र ने महामण्डलेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया

मण्डोर शाखा

- नरभट → पीली पनी की उपाधि
- नागभट्ट I → मण्डोर के बाद मेड़ता को राजधानी बनाया
- झोट प्रतिहार → वीणा वादक था
- कक्क → ज्योतिष, व्याकरविद, कवि था नागभट्ट II के दरबार
- बाउक → प्रशस्ति उत्कीर्ण करवायी
- कक्कुक → मण्डोर | रोहिंसकपुर (जोधपुर में) प्रशस्ति खुदवायी
  - → प्रतिहार वंश का कर्ण माना जाता है

भीनमाल

- → गुर्जर प्रतिहार नागभट्ट I ने स्थापना की
- → महाकवि माघ की जन्मस्थली
- → ब्रह्मगुप्त की जन्मस्थली मानी जाती है
- → चीनी यात्री ह्वेनसाग ने यात्रा की और इसे पी-लौ-मौ-लौ- कहा

ह्वेनसांग :- चीनी यात्री

↳ उपनाम :- सुवांग चुवांग

नीति शास्त्र का ज्ञाता

" " " पण्डित

तीर्थयात्रियों का राजकुमार

प्रिंस ऑफ पिलग्रिम्स

↳ ह्- ह्वेनसांग

ह् → हर्षवर्धन के समय आया।

16 वर्ष भारत में रहा

नालंदा में शिक्षा ली

शिक्षक → शीलभद्र

बौद्ध धर्म की शिक्षा

↓

जयगुप्त से ली

भीनमाल शाखा : → 730 – 756

→ जालौर

↳ **नागभट्ट प्रथम** : इन्होंने भीनमाल में चावड़ों को पराजित कर भीनमाल में गुर्जर प्रतिहार वंश की नींव रखी

इन्होंने दूसरी राजधानी – उज्जैन अवन्तिका को बनाया

→ **उपनाम** : नागावलोक दरबार, इन्द्र के दम्भ का नाशक, राम का प्रतिहार, मलेच्छों का वध करने वाला, नारायण का प्रतिहार

→ इन्होंने, चन्देल, गहड़वाल, राठौड़, गुहिल, चौहान नागभट्ट प्रथम के सामन्त थे

→ शङ्कर राजा दन्तिदुर्ग का द्वारपाल रहे हैं नागभट्ट ।

→ कुछ समय बाद दन्तिदुर्ग को पराजित किया

ककुस्थ :- इन्होंने मण्डोर में विजयस्तम्भ बनाया जो दूसरा प्राचीनतम विजयस्तम्भ है।

पहला → बयाना - समुद्रगुप्त ने बनवाया।

गुर्जर प्रतिहार

वत्सराज : 783 – 795

- उपाधि
  - रणहस्तिन → युद्ध में हाथी के समान दिखने वाला
  - जयवराह → भागवत धर्म को संरक्षण देने के कारण

- दो ग्रंथ
  - कुवलयमाला → उद्योतनसूरी ने लिखा
    - जालौर दुर्ग में लिखा गया
  - हरिवंशपुराण → जीनसेन सूरी

वत्सराज

मन्दिर

ओसिया

सूर्य
जैन मन्दिर बने है।

- महावीर स्वामी का मन्दिर बनवाया
  जो पश्चिम भारत का सबसे प्राचीनतम मन्दिर माना जाता है।

- सच्चियाय माता मन्दिर
- सूर्य मन्दिर का निर्माण करवाया

स्वयं वत्सराज शैव धर्म के अनुयायी थे

हरिहर मन्दिर भी स्थित है।

त्रिपक्षीय संघर्ष की शुरुआत वत्सराज के समय

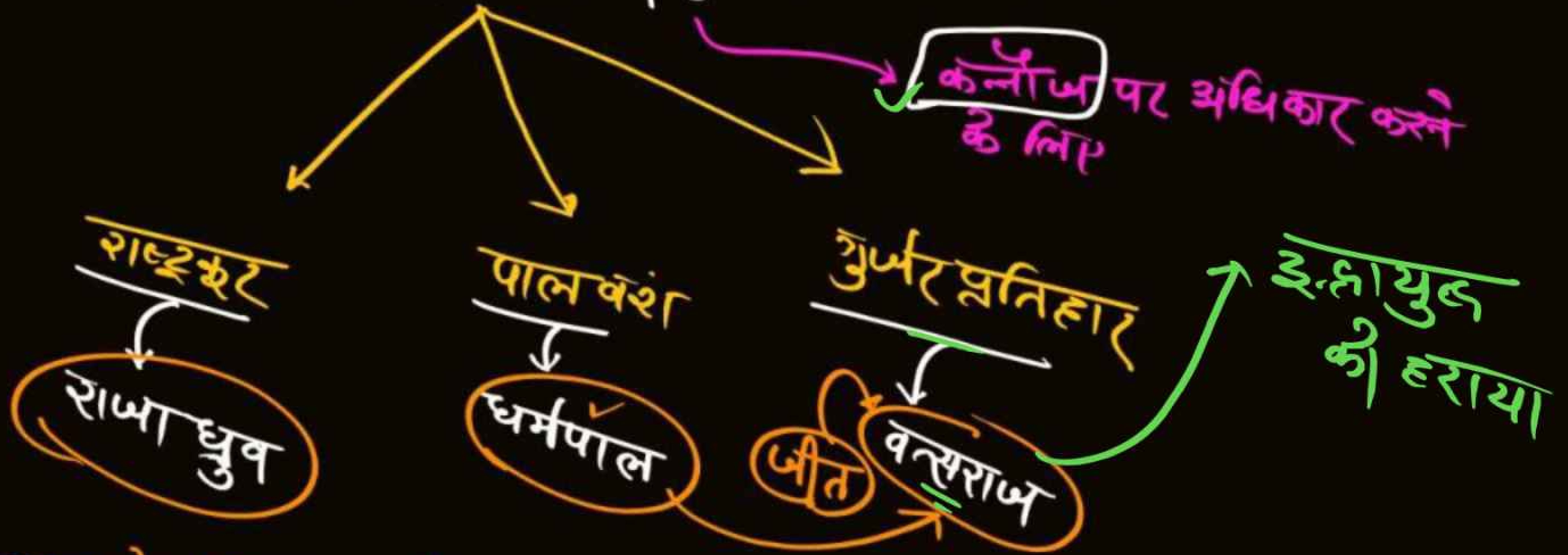

- राजा ध्रुव ने वत्सराज को हराया।
- वत्सराज ने कन्नौज के शासक इन्द्रायुध को पराजित किया।
- वत्सराज ने कुछ समय जाबालीपुर को राजधानी बनाया।
  राजसूय यज्ञ करवाया।

नागभट्ट II

- अरब आक्रमणकारियों पर पूर्णत रोक लगाने वाला शासक
- गंगा में जल समाधि ली
- चौहान वंश के शासक गुवक I को "वीर राजा" की उपाधि दी

→ नागभट्ट II ने अपने गुरु झझक की पुत्री जाबाली का विवाह गुवक I के साथ विवाह किया

→ गुर्जर प्रतिहारों का कर्ण कहा जाता है

- नागभट्ट II ने धर्मपाल | चक्रायुद्ध को पराजित कर कन्नौज पर अधिकार किया
  - → इनको हराने के बाद परमभट्टारक, परमेश्वर, महाराजाधिराज की उपाधि धारण की

→ नागभट्ट II के बारे मे ग्वालियर प्रशस्ति मे नागभट्ट II ने काठीयावाड | मालवा | मत्स्य प्रदेश पर अधिकार किया

→ नागभट्ट II राष्ट्रकूट राजा गोविन्द III से हारा था

मिहिर भोज

- ग्वालियर प्रशस्ति इन्ही के काल मे लिखी गयी
- प्रतापी राजा
- ८३५-८८५
- गुर्जर प्रतिहारो का पितृहन्ता।
  - रामभद्र की हत्या की
- आदिवराह तथा प्रभासपाटन की उपाधि
  - ग्वालियर अभिलेख
  - दौलतपुर अभिलेख
- सम्पूर्ण पृथ्वी को जीतने वाला कहा गया
  - बगुमा अभिलेख
- मुसलमानो को हिन्दु बनाने वाला शासक

→ मिहिर भोज ने राष्ट्रकूट राजा कृष्ण II को पराजित किया

→ मिहिर भोज पाल वंश के शासक विग्रहपाल और देवपाल दोनों को हराया

→ मिहिर भोज की प्रशंसा कल्हण ने राजतरंगिणी में की

→ इन्होंने भगवान की उपासना सगुण, निर्गुन दोनों रूप में की है

→ भगवान विष्णु को हरिकेष कहते थे

imp

सुलेमान

- भारत को काफिरों का देश कहा है।
- अरब यात्री सुलेमान मिहिरभोज के समय आया → 851
- अरबों का अमित्र
- इस्लाम का शत्रु
- काफिरों का देश

  (मिहिर भोज)
- मिहिर भोज की प्रशंसा भी की है
- पुस्तक → किताब-उल-सिंध-वल-हिन्द

महेन्द्रपाल :

- उपाधि → महिन्द्रमति, महेन्द्रायुध, रघुकुल चुड़ामणी, निर्भय नरेश की उपाधि
- गुरु → राजशेखर → महिपाल | महेन्द्रपाल दोनो के गुरु थे
  - पुस्तक → कर्पुर मंजरी ✓
    - काव्यमिमांशा ✓
    - बालरामायण ✓
    - बाल भारत ✓
    - प्रबंध कोष ✓

महिपाल →

इनके गुरु राजशेखर ने महाराजाधिराज, रघुकुल मुकुटमणी की उपाधि दी

→ अलमसूदी - अरब यात्री आया था

→ राजा को बौरा कहा

✓ प्रजा को अलगुर्जर कहा।

महिपाल के समय राष्ट्रकूट शासक इन्द्र III ने कन्नौज पर अधिकार किया।

→ राज्यपाल → महमूद गजनवी का आक्रमण हुआ
→ हत्या करदी गयी

→ त्रिलोचनपाल → 1019 → गजनवी का आक्रमण

→ यशपाल → गुर्जर प्रतिहारों का अन्तिम शासक

1093 में प्रतिहारों पर गहड़वाल वंश का अधिकार